R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 23 | अंक 49 | रविवार, इलाहाबाद, 5 मई 2024 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

कविता में सब जन की बातें,
सीधी-सादी सब सौगातें ।
बड़े अनोखे ढंग से कहती,
जीवन की सारी बरसाते।
आज बताने वह आई है ,
जीवन की भोगी सब बातें ।
यही तो जीवन, यही है पानी ,
देव मनुज की सब मुलाकातें।

तो बात महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की हो रही है। इस बार के महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में, मां दुर्गा के दरबार

कार्यक्रम में पढ़ी गई कविताएं भी है और मार्च, अप्रैल माह के काव्य गोष्ठी में पढ़ी गई कविताओं का संपादित अंश भी है। शहर समता के महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की पूरे देश-विदेश में मिलाकर 40 से ऊपर काव्य गोष्ठी इकाइयां हैं, जो बड़े सुचारु रूप से अपने-अपने दायित्वों के निर्वहन में अग्रसर हैं। लगातार अपनी कलम को धार देने वाली रचनाओं में से कुछ रचनाओं का अवलोकन करना जरूरी है।

जैसे अवंतिका विशाल 'अवि' की दृष्टि देखिए -

एक झोंका आया है
गुज़री तेरी यादों का।
आस पास है तू कहीं
हो रहा अहसास मुझे
तुझसे बंधन गहरा है
नाता मीठी बातों का?

अपनी रचना में अनीता सिंह 'अनु' कहतीं हैं-

अग्नि-परीक्षा नारी के ही ,
क्यों हिस्से में आती है।
हृदय -पीर हरदम क्यों .
उसके हर रिश्ते में आती है।।

दो उदाहरण पर्याप्त है। बाकी रचनाकारों की रचनाओं को पढ़िए, गुनिये और बताइए रचनाकार अपनी-अपनी रचनाओं को लेकर साहित्य जगत के किस मुहाने पर हैं। इस बार की पुरस्कृत रचना कानपुर की सीमा वर्णिका की है। देखिए और प्रक्रिया अवश्य दीजिए।

अंत में -

मुखरित सब रचना को देखें ,
प्यार प्रेम की बानी लेखे।
कहां-कहां वह खो जाती है ,
पढ़ें-लिखें अपने से सीखें ।

-उमेश श्रीवास्तव

पुरस्कृत रचना

श्री सुख समृद्धि का वर दे

पूजन अर्चन करते हैं, माँ नमामि दुर्गा कल्याणी।
श्री सुख समृद्धि का वर दे, मिले मधुर शीतल मृदु वाणी।
पर्व नवरात्र अति पावन, बुरी शक्तियाँ मिट जातीं हैं।
शुद्ध परिवेश हो शुभता, दिव्य शक्तियाँ घर आतीं हैं।।

जप तप वंदन करते हैं, मंत्रों से अनुष्ठान होते।
कर नैवैद्य पुष्प अर्पित , कलश स्थापना ज्वारे बोते।।
सजे दरबार मनभावन, काज मांगलिक करते सारे।
शुभ मुहूर्त में जीवन के, मंगल फल दे माता तारे।।

भक्ति भावना अति मोहक, करें उपवास सब नर नारी।
वरद हस्त धरती माता, कठिन समय पर श्रद्धा भारी।।
भक्ति भजन कीर्तन होते, भक्त भाव विह्वल हो रोते।
सात्विक जीवन हैं जीते, अति पावन अवसर कब खोते।।

-सीमा वर्णिका, कानपुर

कवितायें

माँ की गाथा ??

आज नही तो कल
मेरी माँ से बाते होती है हर पल
माँ ने अपना आशीष दिया
कहा नव रात्रि मे दुगी मै तुझको
तेरी हर मेहनत का फल
तब से लेकर अब तक
मै करती हू ?
पूजा हर पल हरपल
बस लिखती हू माँ तुझे ये ??
आया नव रात्रि का त्यौहार
माता जी की जय जय कार। ।
चक्र, त्रिशूल और तलवार
माता जी की जय जय कार ।।
जय शिव शक्ति जय ओंकार,
माता जी की जय जय कार ।।
रक्त बीज का किया संहार,
माता जी की जय जय कार ।।
मां महा काली रूप अपार,
माता जी की जय जय कार ।।
मां भवानी का दिन मंगलवार,
माता जी की जय जय कार ।
कन्या पूजन और सत्कार,
माता जी की जय जय कार।
लाल चुनरी ,सोलह श्रृंगार,
माता जी की जय जय कार ।
मां करती सब पर उपकार,
माता जी की जय जय कार ।
सजा है देखो मां का दरबार
माता जी की जय जय कार ।।

डॉ प्रीति प्रसाद (प्रीत)

मेरी कलम ??

मेरी कलम से विध्वंस नहीं,
सृजन का साक्षात्कार हो
सूर्योदय की आभा लिए ,
युग-निर्माण का आधार हो
लज्जित हो ना किंचित मुझसे,
मेरे देश की माटी
मेरे प्रति शब्द,
'मां-शारदे' की प्रतिलिपि ,
मेरी प्रति रचना ,
'मां-भारती' का श्रृंगार हो ।।

ना लिखे कलम मेरी,
जाति -धर्म की रंजिशें
ना लिखें मानव का रुधिर ,
ना गढ़ें साज़िशें
मंदिरों, मस्जिदों ,
गुरुद्वारों के पावन ग्रंथ सदृश
मेरे प्रति-शब्द हो,
पावन'गीता' के सौगंध सी
मेरी प्रति-रचना ,
'चारों-वेदों' का सार हो।।

लिख सके कलम मेरी,
प्रेम , प्रार्थना, प्रेरणा
लिख सके कलम मेरी,
समता,ममता, साधना,
धर्म और विज्ञान को
बना सकूं युग्म-सेतु
मेरे प्रति-शब्द हो,
'विश्व-शांति'का प्रतीक
मेरी प्रति-रचना ,
'प्राण-ऊर्जा' का संचार हो।।

डॉ संगीता मनीष बनाफर

ओफ्फोह

मुफलिसी कैसी ये आई ओफ्फोह,
आठ जन में इक रजाई ओफ्फोह।
आम जनता सो रही है भूखे पेट,
नेता काटें रसमलाई ओफ्फोह।
कह रहे वो शहर में दंगे कराकर,
हिंदू मुस्लिम भाई भाई ओफ्फोह।
हमने पीटा जान कर
जिसको रकीब,
निकला वो आइटम का
भाई ओफ्फोह।
क्यूं मियां सूखे छुहारे हो गए,
ऐसी भी क्या आशनाई ओफ्फोह।
जिस हसीना पर थे बैठे हार दिल,
थी दरोगा की लुगाई ओफ्फोह।
ताड़ते थे जिस पड़ोसन को जनाब,
कह गई वो आज भाई ओफ्फोह।
हाले दिल लिखने
जो बैठे तो कलम की ,
खत्म हो गई रोशनाई ओफ्फोह।

शैल गोण्डा

श्यामा के रंग

सखी छेड़ो न हमको,
रंगो के संग,
मन मेरा रंगा है,
श्याम के रंग ।
उसकी बासुरी की धुन,
सुनाई जो दे ,
बोले पायलिया मेरी,
छन न न न छन।
सखी .....
मै देखू जिधर बस ,दिखे वृन्दावन ,
उपवन भी रंगा है, फूलो के रंग ।
कुछ ऐसे बसे है, मेरे मन मे ,
बदरा भी दिखे मुझे, श्याम के रंग।
सखी .....
खेले फूलो की होली ,
गुलालो की होली
खेले लेके पिचकारी ,
सदियो की टोली
मेरा मन भी रंगा ,मेरा तन भी रंगा,
ये जन्म भी रंगा है,
बस श्याम के रंग ।
सखी .....
बस राह निहारू, तेरे सांवरे
मेरे मन मे रहे बस, तेरे भाव रे
चहु ओर दिखे ,फाल्गुन के रंग,
श्याम भी रंगा है ,श्यामा के रंग।

सखी छेडो न हमको रंगो के संग,
मन मेरा रंगा है ,श्याम के रंग ।

विभा श्रीवास्तव

एक झोंका आया है

एक झोंका आया है
गुज़री तेरी यादों का।

आस पास है तू कहीं
हो रहा अहसास मुझे
तुझसे बंधन गहरा है
नाता मीठी बातों का?

कवितायेँ

भले मुझे तू न दिखे
रिश्ता है जज्बातों का।

जुड़ा रहूँगा तुझसे मैं
चाहे कोसों दूर सही तू
महसूस हो रहा है मुझे
उन भीगी-भीगी रातों का?

ज़हन में बसी तेरी मूरत
सवाल झुकी आँखों का।

शर्म से छायी लालिमा
खिली मुस्क़ान लबों पर
मन देख पा रहा मेरा
लेना हिसाब सालों का?

एक झौंका आया है
गुज़री तेरी यादों का।

हर पहर भिगो रहा मुझे
असर मेरी फरियादों का
फुहारों में महक़ती है तू
शुक्रिया इन बरसातों का?

एक झौंका आया है
देता सुकूं क़रारों का।

आकर छू जाती मुझे
कह जाती है कानों में
थाम लू हाथों में हाथ
पर कुसूर तकरारों का?

एक झौंका आया है
गुज़री तेरी यादों का।

अवंतिका विशाल'अवि'

गीत

अग्नि-परीक्षा नारी के ही
क्यों हिस्से में आती है।
हृदय -पीर हरदम क्यों
उसके हर रिश्ते में आती है।।
आरोप लगाकर
दिल छलनी छलनी सा कर देते हैं।
शक के घेरे में उसको
हर बार खड़ा कर देते हैं।
अत्याचार-कहानी बनकर
हर किस्से में आती है।
अग्नि परीक्षा नारी के ही
क्यों हिस्से में आती है।।
उसके हाथ और पैरों में
बंधन सौ- सौ बाँधे हैं।
सर रखकर रोने की खातिर
कभी न मिलते काँधे हैं।
रह-रह कर आकुलता ही
उसके खाते में आती है।
अग्नि-परीक्षा नारी के ही
क्यों हिस्से में आती है।।
शूल चुभो कर हँसना भी
बाधित कर देती है दुनिया।
सब कुछ धीरे- धीरे से
छीन-छीन लेती है दुनिया।
रूप नया ले-ले कर
पीड़ा फिर सपने में आती है।
अग्नि- परीक्षा नारी के ही
क्यों हिस्से में आती है।।

अनीता सिंह 'अनु'

महिला दिवस विशेष

अपनी सलवारो में हम
जेब क्या लगवाने लगे
लोग बागों को हम सब
चकमक नज़र आने लगे

उठा ली हमने हाथ में
जो गाड़ी को चाभियां
कई लड़के वाले हमसे
रिश्ते से कतराने लगे

जो कह दिया कि नौकरी से
तबादला न हो पाएगा
सारे के सारे हमको ही
घमंडी सी बताने लगे

ये न सोचा किसी भी
इज्जतदार परिवार ने
के यहां पहुंचने में हमको
जाने कितने ज़माने लगे

डा शिवानी चंद्रा

शायद अतिशयोक्ति

सौ साल बाद आज के युग के
एक नर कंकाल ने सोचा
चलो मर्त्य का जायजा लिया जाय
बहुत दिन हुये मर्त्य के
गली मुहल्लों को नहीं देखा ।
जैसी सोच वैसा काम
नरकंकाल पहुँचा मर्त्य,
मर्त्य पहुंच कर नर कंकाल हक्का बक्का
कहाँ पहुँच गया मैं मर्त्य में ही हूँ न?
गली मुहल्ले तो जाने पहचाने से हैं ,
फिर ये चारों तरफ मेरे जैसा यह कौन है?
गौर से देखने पर पता चला
वे तो सारे जिंदा मनुष्य हैं !
फिर बच्चे -बूढ़े- औरतें
ऐसे कंकाल जैसे क्यो हैं!
कुछ और घूमने के बाद
एक बड़े मकान के सामने पहुँचा
वहाँ का नज़ारा देख
नरकंकाल को दिलासा मिला
यहाँ के लोग कुछ ज्यादा ही हृष्ट-पुष्ट हैं।
नरकंकाल घूमते हुए संसद भवन पहुँचा
वहाँ के लोग तो ऐसे थे
अपने मोटापे के कारण
हिल नहीं पा रहे थे ।
नरकंकाल ने सोचा यह मर्त्य में तो
एक तरफ जहां स्वर्ग ,
वही दूसरे तरफ नर्क भी है,
ऐसा क्यों?
नरकंकाल आगे बढ़ा और बाजार
का नज़ारा देखने पहुंचा ।
ऊपर पूछे क्यूँ का जवाब
उसे यहाँ मिला
बाजार में फिर से
जिंदा कंकालों से रूबरू हुआ,
रूबरू तो वो उनसे भी हुआ,
जो अपने शरीर के वजन उठाने
में बेहाल थे, फिर भी भर- भर के
सामान उठाए ले जा रहे थे ।
बाजार, जहाँ मुट्ठी के भाव पर चावल
,आटा, दाल बिक रहा था,
सब्जियां हाय रे !
भिंडी, मीठी करेला,परवल
पीस के हिसाब से बिक रहा था ।
नरकंकाल ने समझा सो साल बाद
देश का हालत बदला है
महंगाई आसमान छू रही है
फिर भी कुछ लोग अपने
मोटापे को टिकाये रखे हैं ।।

मल्लिका दे

बूढ़े हाथ

उस बूढ़ी माँ की आँखों में
एक बार झाँक कर तो देखो
जिनमें तुम्हारे लिए केवल
परवाह और ममता छुपी है।
उसके झुर्रियों पड़े हाथों को
एक बार तो चूम लेना
जो ना जाने कितनी बार
तुम्हारे लिए रोटी बनाते हुए जले हैं।
उन हाथों की घिसी पिटी लकीरों को
एक बार गौर से देख लेना
जो तुम्हारे भविष्य को संवारने में
दिन रात मेहनत कर मिटने लगी है।
उन हाथों को अपने सिर के ऊपर
से कभी हटने ना देना
जो तुम्हारे लिए दुआ मांगते
कभी थके नहीं हैं।
उन हाथों को हमेशा पकड़े रहना
जिनके सहारे तुम बचपन में चला करते थे
उन बूढ़े हाथों को छोड़ ना देना कभी
जो तुम्हें गिरने से पहले सम्भाला करते थे।।

दीप्ति मित्तल 'दिव्या'

आज का समय

सुविधाओं के इस दौर में जीवन हो गया
बहुत कठिन है,
अब नहीं किसी के पास समय है,
हर व्यक्ति अपने में ही व्यस्त है,
तो फिर कहां अपनों से अपनों का मिलन है,
सुविधाओं के इस दौर में .....
एक दौर था जब किसी गांव में एक बच्चा
पढ़ लिखकर कुछ बन जाता था,
सारा गांव खुशी से नाचता झूमता था,
एक दौर आज है,
पड़ोसी का तो छोड़ दीजिए,
परिवार के ही बच्चे से जलन है ।
सुविधाओं के इस दौर में .....
आजकल एक नई समस्या का
इजाफा हुआ है,
बहु को बहू नहीं बेटी समझो,
ऐसा दबाव और ऐसा प्रचलन है
पूछते हैं हम क्यों भाई क्यों,
बहू का बहू ही बने रहना क्यों मुश्किल है,
सुविधाओं के इस दौर में .....
बड़े अरमानों से शादियां की जाती हैं,
खुशी खुशी बहुएं घर लाई जाती हैं
थोड़े दिन बाद फिर क्या होता है,
दुनिया गई भाड़ में उसका तो बस ,
केवल केवल केवल सजन है
समझाना होगा हमें ,समझना होगा उसे,
जिसे तुम पाई हो वह किसी पिता का बीज,
और किसी मां की कोख का सृजन है ।
सुविधाओं इस दौर में
जीवन हो गया बहुत कठिन है।

पुष्पा सिंह

एकाकीपन

आज बहुत दिन बाद
निकली हूँ खोज में
कहीं देखे हैं किसी ने,
मेरे शब्द खो गये,
दूसरे शब्दों में
हिरा गये कहीं,
खोजा मन के हर कोने में
बाहर भी खोजा गहराई से
सिर्फ वही नहीं
मेरे भाव भी गुम है
मेरे अंर्त से।
रचूँ क्या?
लिखूँ क्या?
कलम भटक रही है,
खोज में उनके
कोई तो बता दे कि
रचना क्या है?
इतनी विकृति दिख रही है,
विद्रूपता छाई है
जीवन के हर प्रहर में।
कहीं बिखरे बिखरे से घर हैं,
कहीं घर रह गये है,
ईंट गारे के मकान।
एक छत के नीचे
सब गूँगे जी रहे है।
बस आवाजों को तरसते कान
मंद रोशनी के बचे हैं।

रेखा श्रीवास्तव

चैती गीत

गेहूँ, चना,मटर की देखो,भई सुनहरी बाल।
चौपालन में धूम मच रही,नाचें बूढ़े-बाल।
हो भैया!नाचें दे-दे ताल।
गेंदा-गुड़हल झूला झूलें,भँवरे पेंग बढ़ावें।
रस चूसें फूलन के भंवरा,हमरो मन तरसावे।
बागन में कोयलिया बोली बौरा गये रसाल।
ओ भैया नाचें दै - दै ताल....
गालन पै गौरी को देखो ,
कैसे खिले गुलाब ?
ननदोई , देवर जी माँगे ,
अपनों आज हिसाब ।
लुक - छिप ननदी भौजी ढूंढे ,
अंगना मच्यौ धमाल ।
ओ भैया नाचें दै- दै ताल ....
सिगरौ जग मद मस्त है गयौ ,
पी फागुन की भंग ।
छोड़ो घर के काज ओ भौजी ,
खेलो संग में रंग ।
ढोल , नगाड़े , चंग बज रही ,
उड़ रह्यौ गगन गुलाल।
ओ भैया!- - -
पवन वसन्ती वसन उड़ावे,
चूनर कैसे ओढ़ूं।
अब लौं न आये ननदी के भैया,
कहाँ गाँव में ढूँढूँ।
फागुन में अनंग ने अंग-अंग,
कर डारे बे हाल।
की भैया----
नव रस की भर के पिचकारी,
गीतन रंग बरसाऊँ।
घुँघटा उड़ि-उड़ि जावे मुख से,
कासों मैं शरमाऊं?
ससुर ,जेठ देवर बनि मल गए,
गालन आज गुलाल
ओ भैया - -

डॉ.सुषमा त्रिपाठी

नारी तुम नारायणी

पहचान रूप अपना नारी,
अब तुमको शक्ति बनना है,
धर रौद्र रूप, ले खड्ग उठा,
तुझको रणचंडी बनना है,,
अब रक्तबीज हैं पनप रहे,
इक को मारे, तो कई खड़े
ले हाथ कटार तू चल रण मे,
अब मुंड माल गल सजना है,,
हां, धधक रही ज्वाला प्रचंड,
आहूति शत्रु का देना है,
महिषासुर की बेधें छाती,
वध रक्तबीज का करना है,,
दु : साहस अब कोई ना करें,
हर नारी का सम्मान रहे ,
है सृजन सृष्टि का नारी से
नारी से ही यशगान बढे,
तुम श्रद्धा हो, तुम शक्ति हो,
तुम ही मीरा की भक्ति हो।
तुम अनुसुइया, महतारी हो,
पलने त्रिशक्ति को डाली हो।।
तुम दुर्गा सी अवतारी हो,
तुम पद्मावती, झलकारी हो।।
अरि का मर्दन करनेवाली,
तुम रक्त बीज संघारी हो।।

शोभा त्रिपाठी शैव्या

हे! कृष्ण

सुन रहे हो ना,
हे! कृष्ण, तुम सुन रहे हो ना...
तान मुरली की ऐसी छेड़ी तुमने,
अधर्म का धुल गया है नख-शिख,
खुद तुम्हें भी पता नहीं है 'कृष्ण',
क्या दिया है तुमने वो अलौकिक,
इस दृष्टि को, समस्त सृष्टि को,
नमन है तुमको, नमन है तुमको,
शत् शत् कोटि नमन है तुमको,
सुन रहे हो ना,
हे! कृष्ण, तुम सुन रहे हो ना...
कर जोड़ कर, कर रहे हैं वंदन,
समस्त जड़ और समस्त चेतन,
तिनका हो... या हो मानव,
देव, किन्नर... या हो दानव,
पत्ता-पत्ता... बूटा-बूटा...,
नतमस्तक हर इक नार-नार,
और वो ड्पुरुषड भी, कोई ना छूटा...
सुन रहे हो ना,
हे! कृष्ण, तुम सुन रहे हो ना...
इस मन को कहां उड़ा ले गए,
गीता की उन तंग गलिन में,
कौन सा ऐसा गीत सुनाया,
उथल-पुथल सी मची है दिल में,
तुमको पढ़कर खुद को जाना,
खुद को पढ़कर तुमको जाना,
ऐसी प्रीत लगी है, 'कृष्णा'
बस तुमको ही पढ़ती जाऊं,
बस खुद को ही पढ़ती जाऊं...

शुभा भौमिक

मैया विनती करु

मैया विनती करु,
दोनों कर जोरी।
मैया अन्न भी दिया,
तूने धन भी दिया
छज्जे चौबारे बहुत दिए।
मैया विनती करु.....
मैया एक विनती, हम बहनों की।
करो चटक चुनरिया बहनों की
एमअस्तु कहे दुर्गा बोली,
तेरी मनसा पूरण हो बहनि!!

अनीता दुबे

आदि शक्ति मां

ओ मैया आओ हमारे द्वारा
तुम्हारा इंतजार है ,
फूलों से मैंने सजाया दरबार
कि तेरा इंतजार है।
लाल लाल चुनरी नारियल प्रसाद,
भोग लगाओ मैया करूं मैं इंतजार?। ??
भक्तन पर भारी भीर पड़ी है,
चहुं ओर महामारी करे है परेशान । ?मेरी
मैया आओ चलो दरबार,
तुम्हारा इंतजार है ।
तू ही कालरात्रि ,
तू ही चंद्र घंटा है, महागौरी कूष्माण्डा
शीतला भी तू,
स्कंद माता और कामाख्या भी तू ।
सारा जग देखे है आंखें पसार।
ओ मैया आओ हमारे द्वारा ।
मैया आओ 9 दिन करो
अभिसार तुम्हारा इंतजार है ।

कविता उपाध्याय

अष्टमी -माता महागौरी

लाखों भक्त निराले हैं माँ,
कई नाम मतवाले तेरे।
करती हो सदा कल्याण,
हर लेती हो संकट मेरे।।

उर में सदा विराजो माता,
सबकी सुनती हो जगदंबे।
कष्ट और सभी पीड़ा हरो,
सकल सुख देती है अंबे।।

हर मानुष है गौरी माता,
तेरे दरश का प्यासा।
सबकी माता तुम करना,
उर की पूरी अभिलाषा।।

तेरे भक्त सदा तेरा ध्यान करें,
आकर सकल भक्त सदा,
तेरे चरणों में ही शीश धरें।।

सभी पर महागौरी दया कीजे,
आशीष का सिर पर रखो हाथ।
अपनी कृपा बरसा कर माता,
तुम भक्तों का देना साथ।।

सुषमा सिंह उर्मि

नवदुर्गा

नवरात्रि मे नव रूप धरे माँ,
हर रूप की अपनी है महिमा।
कुछ शब्द न सुना पाएँ आपकी गरिमा ,
शैल पुत्री प्रथम हो तुम कहलाती
हिमराज की सुता दुनिया बताती ।
द्वितीय रूप ब्रह्मचारिणी हो तुम,
दुखियों की दुख हारिणी हो तुम।
चंद घंटा तृतीय रूप है तुम्हारा ,
दुष्ट प्रकंपित होते जग सारा ।
कुष्मांडा रूप तुम्हारा चतुर्थकम
उल्लास। का देती, तुम नया सोचने ।
पंचम स्कंदमाता तुम हो कहलाती,
कार्तिकेय संग हो तूम पूजी जाती।
षष्ठम रूप कात्यायनी कहलाती तुम,
कात्यायन ऋषि की सुता हो तुम।
कालरात्रि तेरा सप्तम रूप है
जिसमें दुष्टों का बेडा पूरा.गर्क है।
अष्टम रूप तुम्हारा है महागौरी
कुन्दन सुमन सी कोमल नारी.।
नवम रूप सिद्धि दात्रि हो तुम ,
सुख समृद्धि मोक्ष प्रदात्रि हो तुम ।
घर-घर घट स्थापना संग पूजी जाती,
जन मानस का जीवन
खुशियों से भर जाती।

सावित्री मिश्रा

दिवस ,7,मां काल रात्रि

मां कालरात्रि, ये आत्मसाक्षात्कार,
मां तेरा आविष्कार ,
ये जल उठे दीप हजार कलयुग मे
किए तूने नए चमत्कार ये कालरात्रि,,,,,,
कुसंस्कारों की चट्टानें,
आसक्ति की यंत्रणाएं,
भय शंका की श्रृंखलाएं,
पर्वत सी भारी मंत्रनाएं,
सब कहां ढह गई,
बिखर कर रह गई ,
तेरी करुणा के सांद्र सागर मे अगणित हम
पर तेरे उपकार ,
कलियुग मे किए तूने
नए चमत्कार हे कालरात्रि ,,,,,

अत्याचारी का तर्जन ,भ्रष्टाचारी का मर्दन ,
व्यभिचारी का नर्तन ,ज्ञान विज्ञान का सर्जन
परवर्तित सब कैसे हुए ,तेरे मातृप्रेम आगार्
मे तूने सुझाया इस पार ,उस पार कलियुग मे
किए तूने नए चमत्कार हे काल रात्रि ,,,,,,,

शक्ति हीन की मुखरित आहें , दुर्बल
की अरचित बाहें ,पीड़ित की क्रांदित
राहें ,शक्तिदायी हुए ,वीरवार हो गए ,जागे
निरानंद घर घर मे ,सबको जगाने हुआ तेरा
अवतार कलयुग मे
किए तूने नए चमत्कार हे काल रात्रि,,,,,,

नवयुग करता है तेरा अभिनंदन ,
निर्मल मन से कालरात्रि मां का वंदन तू,
माता माईहम सहयोग के नंदन ,
तेरा आशीष हर माथे का
चंदन तेरी कृपा से भर लिया हमने ,
सागर गागर मे,
तेरे चरणों मे शत कोटि नमस्कार ,
कलियुग में किए तूने
नए चमत्कार हे कालरात्रि मां,,,

सुनीता गुप्ता'सरिता'

सुबह सुबह खोला द्वार,एक कन्या सुकुमारी
क्यारी से ।
पुष्प तोड़ बना रही थी हार,मैंने स्नेहानुनय
किया प्यारी से
आओ पधारो करूं मान मनुहार,
शीतल जल का पान कराऊं दुलारी को।
केसर चंदन और कुमकुम से भाल सजाऊं,
लौंग इलायची का बीड़ा खिलाऊं।
गोटेदार चुनरी अंग सजाऊं,
ध्वजा नारियल केसर पेड़ा, अंक बिठा कर
आप जिमाऊं
वो मुसकायी, नैन मटकायी,तपाक से बोली,
अरे मोरी मैया!!
मोहे तो तेरो गेह, तेरो नेह, लागो अति
प्यारो ??
मैं तो तेरे ही साथ बिराजू अलग-अलग
रूपन को धारूं।
सुन कर तेरे मीठे बैन अनुरागी नयनन मिल
चैन ।।
स्नेह सुधा मयि,ज्ञान विभामयि ,
हरो सब ताप जग के,
शुभम् करोति कल्याणं मां ????

स्नेह सुधा

नव रात्रि

नवरात्रि में आती मां , धारे रूप अनूप।
भवन अनोखे सज रहे, खिले रात में धूप।
चूनर, चूड़ी, कंगन हैं, माता के श्रृंगार।
भोग लगे हलवा चना,भरती है भण्डार।
माता के दरबार में, होती जय जयकार।
भय बाधा सब दूर हों, करती बेड़ा पार।
देव,दनुज माने सदा,माता का उपकार।
देवों की रक्षा करी, दुष्टों का संहार।।
भवन विराजी मात तुम, लेकर लांगुर साथ।
धूप दीप अर्चन करें, चरण झुकाएं माथ।

कवितायेँ

महागौरी मां कालिका , तुम दुर्गा अवतार
चरण शरण में होत मां ,भक्तों का उद्धार।
शक्ति रूपणी मात तुम, नवरात्रे, नौ वार।
कन्या पूजन नौ दिवस,करता है संसार।

प्रो पूनम चौहान

माता की चौखट

आज पहुंची थी मंदिर की चौखट पर,
भक्तों की अपार भीड़ थी,
सबके हृदय में अपनी अपनी पीर थी,
किसी को धन की किसी को
जमीन की किसी को चाह नथी,
ऊंचे ऊंचे मकानों की,
चकित था प्रभु, गरीबों से भी ज्यादा,
लंबी कतारें थी धनवानो की,
खाली न जाए कोई इस दर से,
ये इच्छा थी सारों की,
10 पैसे का सिक्काडाल दानपत्र में,
प्रभु से तमन्ना थी लाखों हजारों की,
मुझको यह न दिया मुझको वह न दिया,
यह सुनकर प्रभु मुस्कुरा रहा था।
श्रेष्ठ सबसे मनुष्य तन तुझे दे दिया
सब्र तुझको ना आए तो मैं क्या करूं?
मंदिर की चौखट पर कोई भिखारी यह गा रहा था।
इच्छाएं असीमित हैं साधन सीमित है,
प्रभु ने देने में कहां कुछ लगाई देर है?
हे मानव बस तुम्हारे समझने की देर है।
जय माता दी

पुष्पा सिंह कानपुर

मां कात्यायनी

उमा गौरी दुर्गा काली जगत कल्याणी
नमस्तुभ्यं ममतामयी मां कात्यायनी ।।
वैद्यनाथ में प्रकट भुवन मोहिनी
ऋषि कात्यायन पुत्री कात्यायनी,
नमस्तुभ्यं अमोघ फल प्रदायिनी
स्वर्ण पुंज आभा मन मोहिनी ।
उमा गौरी दुर्गा काली जगत कल्याणी
नमस्तुभ्यं ममतामयी मां कात्यायनी ।।
चारभुजा धारिणी पद्म सुशोभिनी
हे ! सर्व बाधा दुर्गति नाशिनी
शुंभ-निशुंभ महिषासुर मर्दिनी
ब्रजमंडल की अधिष्ठात्री ।
उमा गौरी दुर्गा काली जगत कल्याणी
नमस्तुभ्यं ममतामयी मां कात्यायनी ।।

सुनीता जौहरी

मेरी मां

मां की ममता का, कोई मोल नहीं है,
मां बच्चों की जां,मां अनमोल होती है,
करो ऐसा मां का दिल कभी दुखने न पाए,
मां तो हमारी पूजनीय व वंदनीय होती है।

मां जैसा जगत में ना कोई दूजा होता है,
मां तो परमात्मा का सुंदर तोहफा होता है,
जीवन में मां का स्थान कोई ले नहीं सकता,
मां का आंचल सदा हमको हर गम से बचाता है।

मां के स्नेह वर्णन को कोई शब्द नहीं है,
मां इस दुनिया में होती सबसे प्यारी है,
बिन तेरे मां मेरा यह अस्तित्व ना होता,
मां के चरणों में करते नमन और वंदन है।

मां के साये में हम सब महफूज रहते हैं,
मां की उंगली पकड़ जमाने में चलना सीखा है,
मां तुम से ही मेरा ये संसार है रौशन ,
मां मेरी गुरु ,शिक्षक व सच्ची सहेली है।

रंजना बिनानी काव्या

नए रिश्ते

हमारे जीवन की फसल होते हैं नए रिश्ते,
जिस तरह से सिंचते उसी तरह से पनपते।
रिश्ते वो बड़े नहीं होते जो जन्म से मिलते,
रिश्ते वो बड़े होते हैं जो दिलों से जुड़ते।।

शीशे,धागे,सपने,रिश्ते कभी टूटने मत देना,
कसूर किसी का भी हो आंसू पौंछते रहना।
मोती की माला जैसे रिश्ते अगर टूट भी जाए,
झुक कर मोती उठा लेना कि माला बिखर नहीं पाये।।

जब जंग अपनों से हो खुद हार जाना।
मुस्कुराकर गले लगाने का हूनर आजमाना।
मजबूत हाथों से पकड़ा हाथ भी छूट जाता हैं,
रिश्ता ताकत से नहीं विश्वास और प्रीत से निभाया
जाता है।।

रिश्ते नसीब से मिलते हैं सीखो उन्हें सजाना,
प्यार से सिंचकर खूबसूरती से होगा इन्हें निभाना।
कमाल नहीं होता हजार रिश्तों को संभालना,
एक से हजार रिश्ते बन जाते हैं सदा सीखो मुस्कुराना।।

सरला बजाज

हमारे घर में खुशियां रहती है

हमारे घर में खुशियां है भरपूर
खुशियों का राज है संयुक्त परिवार
एक दूसरे से मिलकर करते है बाते
एक साथ बैठकर करते है भोजन
करते है एक दूसरे की खिंचाई सभी
राम बोला देखो मां भाभी ने क्या बनाया
देखो देखो भैया की पसंद का ही भोजन बनाया
मुझे नहीं पसंद है यह सब्जी रोटी आप सबको पता
नाराज हुए थोड़ा थोड़ा सा भाभी से प्यारा देवर
इतने में ताइजी बोले बेटा क्या भोजन थाली में आया
नहीं तो ताईजी अभी तो नहीं आया टेबल पर भोजन
तो क्यों मुंह को पहले से ही पिचकाया हो मेरे लाला
झट से बोली बहना भाई, भाई पता है क्या बना खाने मे
बर्दाश्त नहीं होती है भाई की यह बेरुखी बहना से
बना आपके लिए बिदाम का हलवा व केले के कोफ्ते
इतने मे उठ खड़ी हुई नन्ही सी परी
दौड़ी दौड़ी दादा से लिपट गई दादा, दादा
मुझे नहीं भाता यह दोनो मुझे होटल ले चलो
इतना सुनते ही दादी ने कुछ विचार किया और
दादी ने बुलाया क्या चाहिए नन्ही सी प्यारी परी को
आपकी पसंद के बनाए है हमने पास्ता व पुचके
और बनाए आपके लिए ब्रेड टोस्ट जाम के साथ
दादी का चेहरा चूम लिया नन्ही सी परी ने
तुतली बोली मे बोली मेरा घर मेरा संसार
मेरे घर में खुशियां रहती है हजारों
राम राम सा घणा घणा राम राम सा
भगवती शिव प्रसाद जी बिहानी
ताल छापर चूरू राजस्थान
खिलते हुए फूल
तुम तो मेरे दिल के बाग का एक फूल हो साजन
जो जीवन भर खिला रहे ऐसे हो मनभावन!
तुम बिन जीवन अब हर पल मेरा अधूरा
बोलो बिन साजन कैसे हो कोई सपना पूरा!
तुमसे से ही ये बागों के खिलते हुए फूल हसीन लगते है
सच कहूं तो इन पर ओस के मोती भी रंगीन लगते है !
माना इन फूलों की जिन्दगी सुबह से शाम तलक होती है
मगर फिर भी खुश रहकर हमें जीने की ललक देती है!
तुमने ही तो दिए हैं मुझे ये फूलों जैसे सौलह श्रृंगार
मेरा रोम रोम कहे हर जन्म रहूं मैं तेरी ही नार!

सीमा सिंघी

अंजनी के हुआ लाल केसरी हर्षाए

अंजनी के हुआ लाल केसरी हर्षाए,
चैत्र मास पूर्णिमा मंगलवार अति भाए,
फल समझ कर सूर्य भक्षण कर आए,
चारो तरफ हुआ अंधेरा कोई कुछ न कर पाए,
माँ का लाला राम भक्त कहलाए,
केसरी नन्दन पवनपुत्र कहलाए,
जब सीता का हरण हुआ राम दुखी भए,
खोजने माता को सौ योजन समुद्र लाँघ गए,
मुख में रख मुद्रिका सुरसा को मात दिए,
धर मक्षिका सा रूप लंका के अंदर गए,
मिले विभीषण से माता का पता लगाएं,
देख दशा सिया की हनुमत दुखी हो गए,
फल खाएं पेडो को तोड़ा निशाचर मार गिराए,
धुँ - धुँ कर जली लंका नर नारी घबराए,
एक उद्देश्य से जन्म लिया सिया को राम से मिलाए,
भरी सभा में सीना फाड़कर सियाराम दिखाए ,
मंगल, शनि को होती पूजा राम भक्त हनुमान कहलाए ,
कलयुग के माहि संकट काटे संकट मोचन कहलाए ।

मीना नागोरी

बिटिया

कभी मां कभी बहन
और कभी सखी बन जाती है
वह मेरी प्यारी बिटियाहै
मेरी तो पूरी दुनिया है
वह मेरे जीवन का उजियारा है
जिंदगी उससे जगमगाती है
मेरे मन को सुकून तब आता है
जब गुड़िया मेरी मेरे गले लग जाती है
जो मैं हो जाऊं उदास कभी
गुड़िया मेरी मुझे हसाती तभी
जो मैं हो जाऊं बीमार कभी
सेवा में पीछे नहीं हटती कभी
ईश्वर ने किया मुझ पर एहसान है
वह उसका दिया सबसे प्यारा उपहार है
मिली है वह मुझे भाग्य से
संवार लू उसे मै प्यार से
जो मैं थक जाऊं कभी जिंदगी से
वो तो मेरी पूरी जिंदगी बन जाती है
कभी मां कभी बहन और
कभी सखी बन जाती है
कभी सखी बन जाती है।।

सुमन पोखरना चित्तौडा

जनम-जनम का साथ हमारा

याद,नाद, है साथ तुम्हारा,
जिसने ये मधुवन सँवारा।
गीतों की धुन पर ही हमने,
अपना सारा जीवन वारा।
मन में बस जाने के उनके,
सौ -सौ जतन सुहाने हैं।
खुद के दिल के दरवाजे पर,
कितने पहरे ताने हैं ।
सरिता सम सागर तक जाना,
संग रहो बनके किनारा।
हर -पल हर- दिन तुम्हें पुकारें,
आजाओ सरकार साँवरे।
दर्शन को ये नैना तरसे ,
दूर करो अब दुःख हमारे ।
घर - आँगन को रोशन कर दो ,
तुम बिन रहना नहीं गवारां।
मुरली की धुन पर ही हमने ,
अपना सारा जीवन वारा ।
इस जग में ,मैं फूल कमल का ,
बनकर जीना चाहती हूं ।
नीर से निर्लिप्त रहूं ,और,
अमृत रस पीना चाहती हूं।
भ्रम को तोड़ो,जिद ये छोड़ो,
जनम- जनम का साथ हमारा!
मुरली की धुन पर ही हमने ,
अपना सारा जीवन वारा।

लाजवन्ती शर्मा

सच कहती हूँ

सच कहतीं हूँ अम्मा मेरे,
मन के हैं सारे रिश्ते तेरे।
मैं सरल भाषा जैसी,
सभी सरल मितभाषी मेरे।
सच कहती हूँ अम्मा मेरे,
मन के है सारे रिश्ते तेरे।।
जैसे राम का भाई लक्ष्मण,
जैसे द्रौपदी के भाई कृष्ण,
मेरे भी सब अपने जैसे,
अपनत्व लुटाते रहते ऐसे,
पूरी करते हर चाहत मेरी,
खुदा का अनमोल उपहार मेरे,
सच कहती हूँ अम्मा मेरे ,
मन के है सारे रिश्ते तेरे।
जीवन का पाठ पढाते ,
नित नव खुशियाँ दे जाते,
खट्टी मीठी यादों की बूँदें बरसा,
हर लम्हा वो अपना कर जाते,
सपनों सभी पूरे हो मेरे ,
हर लम्हा साथ रहते मेरे,
सच कहती हूँ अम्मा मेरे ,
मन के है सारे रिश्ते तेरे।
वार त्यौहार पर हमें बुलाते,
सुख दुःख का हाल पूछते,
आँखों में आंसू आ जाये तो,
सिर पर हाथ फेर प्यार जताते।
पल्लवित हो रहे है रिश्ते
पूर्ण हो रहे है सपने मेरे,
सच कहती हूँ अम्मा मेरे,
मन के है सिरे रिश्ते तेरे।।

डा राजमती पोखरना सुराना

गर्विता

सफलता मेरी देखकर सराहो या ना सराहो
हौंसले से ही उड़ान है
भले तुम चाहो ना चाहो
पहला कदम मेरा.
समझदारों के लिए तो शान है
मेहनत तो देखी नहीं,
चेहरे पर ही बस ध्यान है
फोटो क्यों छपा,
उसके बारे में तो कहा एक भी शब्द नहीं
दसवीं की टॉपर बनी प्राची,
पर हुआ जरा सा भी गर्व नहीं
तुमको अपने ही बोल बड़े,
कैसे सबको सुनाने हैं
आदिम कालिन सोच तुम्हारी,
इसका कोई मूल्य नहीं
माना की सुंदरता के पैमाने पर

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- **तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-**

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संरक्षक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

कवितायेँ

नहीं खरी उतरी मैं,
देख-देख कर हुलसो,
नहीं हूं वैसी परी मै .
तुम कौन हो,
मेरी सूरत पर जो सवाल उठाते हो
बेमतलब की बातों से तो कभी नहीं डरी में,,
सूरत और सीरत का तो,
खेल ये बरसो पुराना है
देह पर ही सब मरते,
मन को कहाँ किसने जाना है
कौन है कितना काबिल,
सोचना अब यह छोड़ो तुम
लिखूंगी नई इबादत,
अभी तो दूर तक मुझे जाना है
सुनती नहीं कटाक्ष उपहास करना
तुम्हारा व्यर्थ है
मैं और मेरा चेहरा,
तुम्हारे व्यंग बाणों का क्या अर्थ है
कुछ नहीं होकर भी,
आलोचना से जग को भरमाते हो
कंटक पथ पर भी चलने का,
मुझ में बड़ा सामर्थ्य है

अर्चना जैन

मेरा घर मेरा संसार

ईट से बना यह मकान
कोई साधारण आवास नहीं
यह है मेरे जीवन का आधार
यहां बसता है मेरा पूरा परिवार
इस छोटे से घरौंदे से मुझे है बेपनाह प्यार
मेरा घर मेरा संसार ध
डोली में बैठकर आई थी
अर्थी में सज कर इस घर से जाऊंगी
रहे मेरा घर सदा आवाद
तभी तो मैं सुखी रह पाऊंगी ध
पूरा जीवन अपने घर को सवारने में बिताया
तभी तो स्वर्ग सा सुंदर मेरा घर बन पाया
सकारात्मकता और स्वच्छता का रखा पूरा ध्यान
मानो हर एक कोने में बसते हो भगवान ।
रसोई घर मेरी जान
बैठक कक्ष मेरी शान
साज सजावट और इनडोर प्लांट्स
बढ़ते मेरे घर का मान ।
मेरा घर मेरा संसार
सुंदर आंगन और फुलवारी मेरा दुलार
घर के एक-एक कोने से करती हूं मैं बेपनाह प्यार
क्योंकि मेरा घर मेरे जीवन का सार

पूनम अग्रवाल ,
गोलाघाट, असम

ग़ज़ल

घर को घर कहने का अब मन नही करता
जब से उसने रात में दरवाजा दिखा दिया।

जिसको सींचा था हमनें
ख्वाहिशों के खून से
उस गुलशन को
उसने खंडहर बना दिया।

बिछी हुई थी उसके कदमों में
मेरी पाक मोहब्बत
कसीदा गैर का पढ़कर
उसने आइना दिखा दिया।

उसकी नज़र में
हुस्न का कोई और मोल है
रंगत बदल कर चलना
हमको सीखा दिया।

बड़ी शिद्दत से उसके ख्वाब को
फूलों से सजाया था
उसने जरॅे जर्रे में मेरे
कांटा बिछा दिया ।

डॉ. मन्जू प्रकाश

ग़ज़ल

होश आया मुझे चोट खाने के बाद
अश्क़ बहते रहे घाव पाने के बाद

बात कुछ भी नहीं बात फिर भी बढ़ी
आग बुझती कहाँ हैं लगाने के बाद

आग में हम जले आग में वो जले
लोग हँसते रहे बस लड़ाने के बाद

चर्चे होने लगे जिस तरफ देखिए
घर में मजलिस लगी ग़म बढ़ाने के बाद

डोर टूटी तो फिर टूटती ही गयी
फिर कहाँ हम मिले रूठ जाने के बाद

कुछ बचा ही नही अब तबाही दिखे
सिसकियाँ बस मिली लौट आने के बाद

रचना कहती यही आग तो बुझ गयी
राख केवल मिली बस बुझाने के बाद

रचना सक्सेना

तेरे दिल में रहती हूं

गीतों में न रहती हूं।
ग़ज़लों में न रहती हूं।
मन से देखो पिया मैं,
तेरे दिल में रहती हूं।

दुनिया की न सुनती हूं
मर्यादा भी न लांघती हूं।
मनन तो करो पिया मैं,
तेरे मन की करती हूं।

माया में न रहती हूं।
मद में भी न रहती हूं।
चिंतन तो करो पिया मैं,
तेरे सुमिरन में रहती हूं।

दिखावे में न रहती हूं।
फैशन भी न करती हूं।
प्रेम की हद देखो पिया ,
तेरे चरणों में रहती हूं।

रेनू मिश्रा 'सरस्वती'

यूं तो सफ़र जिंदगी का

यूं तो सफ़र जिंदगी का ,
ताउम्र गुज़रता ही रहा।
सफर तो हमसफ़र से था,
वो अक्स बन -बन के,
मिटता और तिरता ही रहा।
वो जो शरीके हयात थी मेरे ख्वाबों की,
वो ख्वाबों से निकल कर बावस्ता न हुई।
तमाम मिल्कियतें मैं संजोता रहा उम्र भर

वो जो हसीनाएं दौलत थी मेरी
बाखुदा कभी मेरी न हुई।
अठखेलियां लहरों से थी
जलवाफरोज़ हमकदम थी करीब,
नदी के दो किनारे हो जायेंगे
ये तो जुस्तजूं न थी।
खेल बचपन का फिर,
जवानी की मुलाकातें,
दास्तां बन गयी शीरी फरहाद की।
नयनों से अश्क बहते ही रहे राफ्ता राफ्ता,
गोया खारे समुंदर का पानी बन गये।
ये तो टूटे दरख्तों की कहानी है स्नेह,
वरना तोता मैना भी
शाखों पर बस गये होते ।

डा.स्नेह सुधा

वो अहिल्या सी

बिखरे शूल मगर, वो तो चलती रही ।
दर्द मिलता रहा , आंखें भरती रही।
अपनी पीड़ा को सहकर,अमर हो गई हो।
वोअहिल्या सी थी बस तड़पती रही।
दर्द मिलता रहा, आंखे भरती रही।
बिखरे शूल मगर,वो हो तो चलती रही।।

जिसे बेबस जमाने, ने हरदम किया।
शूल चुभते गए ,पुष्प चुनती रही।
रक्त बहता रहा, ठौस उठती रही।
रक्त से पांव के, निशां जो बने।
लक्ष्मी सी उसे, दुनिया कहती रही।
दर्द मिलता रहा,आंखें भरती रही।
बिखरे शूल मगर ,वो तो चलती रही ।।

सिसकी आती रही, रात ढलती रही।
सपने ढहते गए, कोख पलती रही ।
समेटा अपने को, स्वयं में मगर।
ठोकर लगती रही, चीखें दबती रही।
दर्द मिलता रहा आंखे भरती रही।
बिखरे शूल मगर ,वो तो चलती रही।।

जन्म राधा का हो, या सिया का मिले ।
पत्थर अहिल्या बने ,सावित्री यम से लड़े।
त्रिधा दुनिया बेबस ,सताती रही।
दिन हंसता रहा, रात रोती रही ।
दर्द मिलता रहा, आंखें भरती रही।
बिखरे शूल मगर, वो तो चलती रही ।।

डा0 ऋतु पाण्डेय त्रिधा

कुछ तो सोचो जरा

प्रकृति क्यों नाराज हुई है ,
सोचो जरा क्या बात हुई है।
पेशानी पर बल डालो जरा
अपने दिलों को खंगा लो जरा ,
प्रकृति क्यों नाराज हुई है ----

अब तक तो आपस में लड़ते रहे,
अब क्या करोगे सोचो ज़रा
,प्रकृति क्यों नाराज हुई है
सोचो जरा क्या बात हुई है ।
कुछ तो नेह करना सीखो
झंझावातों से लड़ना सीखो ।
मां ने तुमको प्यार दिया ,
फिर क्यों उसे ठुकरा दिया,
नफरतें दिल से निकालो जरा,
भाईचारा पालो जरा ।
एक दिन यहां से जाना तय है
खुद को फिर से संभालो जरा
प्रकृति क्यों नाराज हुई है ,
सोचो जरा क्या बात हुई है ।

कविता उपाध्याय

आज नमक कुछ ज्यादा थे

तीर शब्दों के
चुभते दिल पर,
नारी देखो फिर रोती है।

नहीं चाहती सोना-चाँदी।
नहीं चाहती महँगा गहना।

थोड़ा तो सम्मान करो,
फिर कन्या पूजन क्यों करते हो?

वह पूरा घरबार सँभाले।
क्या उसकी यह गलती थी?

गर्मी की उस तपन में जलती,
रोटी गरमागरम खिलाती।
खुद सूखी रोटी खाती है।
क्या उसकी यह गलती थी?

लगी रही वह तेरी खातिर,
भूल गयी अपना अस्तित्व।
आज नमक कुछ ज्यादा थे।
क्या इतनी-सी ही गलती थी?

बात-बात पर ताने देकर
तुमने उसको मार दिया,
कत्ल किया न छूरी से,
तुमने शब्दों से प्राण लिया।

पढ़ी लिखी थी,
जॉब को छोड़ा।
क्यों?
सारे घरबार सँभाले।

भूल गयी अपना अस्तित्व,
क्या उसकी
कुछ नहीं थी ख्वाहिशें?
फिर वह रोई,
छुप-छुप रोई,
सारे बर्तन साफ हुए।

भूल गई थी गाना सुनना,
आज ही सैड सॉन्ग्स सुने।

जब-जब रोई
खाली डिब्बे
में कितने ही
अचार भरे।

तुम कहते हो,
घर में रहकर
पूरा दिन
करती ही क्या हो?

कीर्ति जायसवाल

कविता

पता नही कितने गमों का
बोझ उठाएगी कविता।
इस बार मेरा पूरा प्यार पाएगी कविता।।
मैं चाहती हूं चांद,
सितारे, रोशनी, धूप लिखूं।
पर कलम से
मन की व्यथा उतारेगी कविता।।

रूहहीन हो गया सफर
अब मेरे लेखन का।
घरौंदा टूट के बिखर
गया मेरी कल्पना का।
शब्द मौन होके
दिशाहीन से हो गए।
पता नही कब तक
जिन्दा रह पाएगी कविता?

हौसले के पंख से
आत्मा का परिंदा न उड़ सका।
घर से रूठा हुआ मन
विदेशों से न मुड़ सका ।
दिमाग भी वेदना,
संवेदना से भारी है ।
इन सबको अब कैसे
संभालेगी कविता ?

कुछ बाहर का तो कुछ अंदर का शोर है।
तन्हाई का अंधकार भी छाया घनघोर है।
सहमी है परछाई आंखे भी भयभीत हैं।
इन्हें कैसे हौसला अब दिलाएगी कविता?

रिस्तो की उधेड़बुन से
जिंदगी का कपड़ा नही बचा।
उधार के बागवान से
घर का उपवन है भरा।
कौन अपना है
कौन पराया है सफर में।
इसे सचमुच पहचान पाएगी यह कविता।।

मन के क्रदन से वाणी का
रुदन भी जारी है।
शोर से दूर अब खामोशी की तैयारी है।
हर तरफ माहौल आतंकी
चुप रहना लाचारी है।
हे ईश्वर कब तक सच कह पायेगी कविता ?

सुकरात आत्महत्या ना करता तो मर जाता।
ऐसी लाचारी में कब तक
जमीर बचाएगी कविता?
दीश की कलम भी अब बेजुबा हो गई।
फिर से कैसे इसे शब्द दे पाएगी कविता?

जगदीश कौर

जीवन के द्वंद से घबराओ ना प्यारे
अपने लक्ष्य से डगमगाओ ना प्यारे

हाय हाय भूल बांज बनाकर देखो
खुशबू फैलाने का जज्बा तो रखो

जीवन में खुशी की उम्मीद ले बढ़ी है
जुनून और हौंसला दोनों ही जगी है

तन मन में सुख शांति दोनों बिखरी हो
रिश्तो में मधुर अपनत्व भी मिलती हो

अनमोल प्रित देश प्रेम से कर ले
सुमित डगर पर आसान से चल ले

हम राही संग प्रेम गीत को मिल गा ले
अविचल हो प्रेम को दूषित न होने दे

मीत प्रीत का अनमोल रत्न मिला जाये
जीवन के गुलशन में अब रंग बिखर जाये

ऋजु पाण्डेय

तुम आओ तो सही..

बस एक बार...
तुम आओ तो सही

अधखुले द्वार की
अजान दस्तक बनकर
मेरे फीके ख्वाबों का
सुरमई रंग बनकर

बस एक बार...
तुम आओ तो सही

मेरा शाश्वत प्रेम और
अडिग विश्वास बनकर
दिल की दहलीज़ पे जमी
शुष्क आंखों की नमी बनकर

बस एक बार...
तुम आओ तो सही

रूह- ए- जिस्म को
झंकृत कर दे, वो
मनहर संगीत बनकर
वीरान रातों को
रौशन कर दे, वो
धवल चांदनी बनकर

बस एक बार...
तुम आओ तो सही

स्पंदित हो रोम-रोम, वो
अनछुआ एहसास बनकर
महक उठे अंग-अंग, वो
मादक खुश्बू बनकर

बस एक बार...
तुम आओ तो सही

अधूरे ख्वाबों की
मुकम्मल ताबीर बनकर

इस बावले मन के,
भरोसे का भरम रखने को...
बस एक बार...
'तुम 'पलटकर' आओ तो सही'..

डॉ विमला व्यास

संस्थापित 2001

संस्थापक : स्वर्गीय कन्हैया लाल, स्वर्गीय श्रीमती साधना

हिन्दी दैनिक/हिन्दी साप्ताहिक

◆ संयम ◆ संस्कार ◆ संतुलन

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित

संपादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

प्रबंध संपादक
अरविन्द पाण्डेय

पंजीकृत कार्यालय: 289/238A, कर्नलगंज, (अनन्त भवन) प्रयागराज- 211002

M.: 9005239332, 9450482227

E-mail: shaharsamta@gmail.com
Website: www.shaharsamta.com